नैनीताल में दुनिया का सबसे बड़ा ग्रासलैंड

नवीन जोशी

यूं दुनिया में चारागाहों के संबंध में खबरें मानवीय दबाव के आगे उनके सिमटने की आती हैं , किंतु इससे उलट नैनीताल जनपद के तराई पूर्वी वन प्रभाग के डौली रेंज में वनाधिकारियों व कर्मियों की मेहनत के आगे प्रकृति एक नई करवट ले रही है। यहां विभाग ने वन्य जीवन संरक्षण कार्यक्रम के तहत 115 हेक्टेअर यानी करीब 288 एकड़ खुली भूमि पर चारागाह का निर्माण किया है। इसे ''कोटखर्रा ग्रासलेंड' नाम दिया गया है।

तराई पूर्वी वन प्रभाग के प्रभागीय वनाधिकारी डा. पराग मधुकर धकाते ने इसे भारत ही नहीं दुनिया का सबसे बड़ा मानव निर्मित चारागाह बताया है। इस चारागाह में 33 स्थानीय प्रजातियों की घासों को रोपकर उनके संरक्षण के साथ 10 स्थानीय प्राकृतिक जल स्रेतों व तालाबों को पुनर्जीवित किया है। आगे यह चारागाह हाथी कॉरीडोर से भी मिल जाता है।

डा. धकाते ने ''राष्ट्रीय सहारा' को बताया कि उत्तराखंड राज्य सरकार की गौला कारपस फंड के तहत वन्य जीवन संरक्षण कार्यक्रम के तहत करीब तीन वर्ष पूर्व जनपद में लालकुआं के पास बिंदुखत्ता के पास गौला नदी से जंगल में करीब 10 किमी आगे मिले इस बड़े प्राकृतिक पुराने मैदान को ''तराई क्षेत्र में पाई जाने वाली घास प्रजातियों के संरक्षण' के उद्देश्य के तहत वन्य जीवन संरक्षण कार्यक्रम के तहत विकसित करने की कार्ययोजना बनाई गई थी। करीब दो वर्ष से इसके चिह्नांकन आदि कार्य प्रारंभ हुए। इसके बाद इस क्षेत्र को तराई क्षेत्र में पाई जाने वाली समस्त घास प्रजातियों के प्राकृतिक ''बैंक' के रूप में स्थापित किए जाने के प्रयास शुरू हुए ताकि भविष्य में किसी प्रजाति की घास के लुप्तप्राय होने जैसी स्थिति में यहां वह प्रजाति मौजूद रहे। पूरे क्षेत्र की जुताई करके अनेक तकनीकों की मदद से यहां पाई जाने वाली एवं नर्सरी में उगाई गई कुश , खस, गोड़िया व पटेरा सहित सहित 33 स्थानीय मिश्रित घास प्रजातियों के पौधे यहां रोपे गये। अच्छी बात यह भी रही कि इनमें से कई प्रजातियां यहां प्राकृतिक तौर पर भी उपलब्ध मिलीं। साथ ही यहां भूजल एवं प्राकृतिक जल श्रोतों की भी उपलब्धता मिली , जिससे घासों को उगाने व विकसित करने के साथ ही जल श्रोतों को पुर्नजीवित करने में भी मदद मिली। कार्यक्रम के दौरान आसपास स्थित हाथीडंगर , चहलखेत, पीपलपड़ाव, नंधौर, टांडा, भाखड़ा, जौलासाल व खोलगढ़ आदि प्राकृतिक जल राशियों के जल श्रोतों का भी पुर्नजीवन कार्य सफलतापूर्वक किया गया। डा. धकाते ने बताया कि इस पूरी सफलता में प्रति हैक्टेयर करीब 10 से 15 हजार रपए का ही खर्चा आया है।

राष्ट्रीय सहारा (देहरादून),11 July 2016